विश्व परिवर्तन की आधारशिला-'महाशिवरात्रि पर्व'

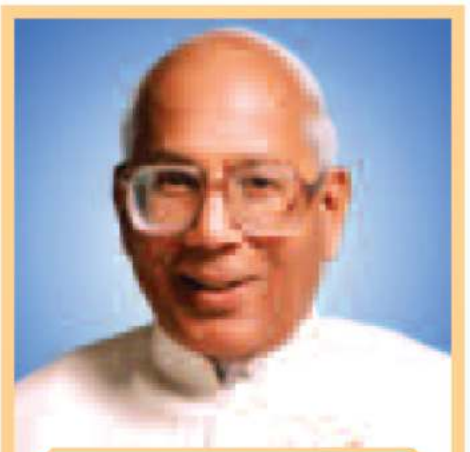

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। लेकिन फिर भी परिवर्तन के लिए मानव प्रयास करता ही है और आज तो हम उन परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं जबकि हर मानव की अन्तरात्मा की यही आवाज़ है कि अब तो इस विश्व में कुछ जल्दी से ही परिवर्तन होना चाहिए, क्योंकि आज धर्मसत्ता और राज्यसत्ता, दोनों ही शक्तिहीन हो गये हैं। मानव दुःख को सुख में, अशांति को शांति में, घृणा को प्रेम में, अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तन कर पवित्रता-सुख-शांतिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है। सर्व आत्माओं की मनोकामना पूर्ण करने वाला एक परमपिता परमात्मा ही है,जिसके अवतरण की यादगार हर वर्ष 'शिवरात्रि' के रूप में मनाते हैं।

यदि शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूप से समझा जाये तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। क्योंकि शिवरात्रि सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्वात्माओं के लिए ही है। उदाहरण के तौर पर महाभारत में भी लिखा है कि "सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रगट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।" मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अण्ड प्रगट हुआ जो हज़ारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में 'धर्म संहिता' में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलयकाल में एक अद्भुत ज्योति लिंग प्रगट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था, वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। देखा जाये तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रंथों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक, 'तोरेत' का आरंभ भी ऐसे ही होता है, सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरंभ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदिकाल में परमात्मा ने ही आदम और हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम 'जिहोवा' मानते हैं जोकि शिव का ही पर्यायवाची है। भारत के तो कोने-कोने में शिव की ही यादगार है। पूरब(काशी) में विश्वनाथ, उत्तर में अमरनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में सोमनाथ, उज्जैयनी में महाकालेश्वर, हिमालय में केदारनाथ, बिहार में वैद्यनाथ, मध्यप्रदेश में ओंकारनाथ, द्वारिका में भुवनेश्वर आदि-आदि, केवल भारत में ही नहीं, लेकिन भारत से बाहर विश्व की प्रमुख संस्कृतियों पर भी शिव की छाप है, जैसे नेपाल में पशुपतिनाथ।

इसी प्रकार से बेबीलोन, मिस्र, यूनान और चीन में भी किसी समय शिव की मान्यता किसी न किसी नाम से थी। बेबीलोन में शिव को 'शिउन' कहा जाता है। मिस्र में 'सेवा' नाम से पूजा होती, रोम में 'प्रियप्स' कहते हैं। इटली के गिरिजा घरों में आज भी शिव की प्रतिमा पाई जाती है। चीन में शिवलिंग को 'हुवेड हिफुह' कहा जाता है। यूनान में 'फल्लुस',अमेरिका के पुरूविया नामक स्थान में आज भी ईश्वर को 'शिवु' कहते तथा काबा में भी पहले शिव की प्रतिमा थी। इससे सिद्ध होता है कि शिव पिता परमात्मा ने विश्व के कल्याणकारी परिवर्तन के लिए ऐसा विशेष कार्य किया है। इसलिए आज तक शिव की विश्वव्यापी मान्यता है।

मानसरोवर-शांतिवन। प्रशासनिक अधिकारियों के जीवन को हर प्रकार से दबाव और तनाव से मुक्त बनाने के लक्ष्य को लेकर 'चार दिवसीय ट्रेनिंग एवं योग भट्ठी' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ प्रशासनिक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु.आशा दीदी, प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु.अवधेश दीदी, प्रभाग के मुख्यालय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. हरीश भाई, प्रभाग की लखनऊ ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.राधा बहन, प्रभाग की जयपुर ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.पूनम बहन, प्रभाग की ईस्टर्न कोलकाता ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.कानन बहन, रिटायर्ड आईएएस ब्र.कु.सीताराम मीणा, ओ.आर.सी.दिल्ली की फैकल्टी ब्र.कु.वैधात्री बहन, प्रभाग की भोपाल ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु. रीचा तथा अन्य।

होशियारपुर-पंजाब। गीता जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधान अखिल भारतीय ज्योतिष कर्मकांड पंडित सिकंदर पाल सिंह, कथा वाचक पंडित सचिन शास्त्री, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ऊषा बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन, ब्र.कु. मनिंदर बहन, ब्र.कु. ज्ञानसिंह भाई आदि उपस्थित रहे।

मालपुरा-राज.। बैंक ऑफ बड़ौदा के मैनेजर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.प्रियंका बहन।

पाण्डव भवन-माउण्ट आबू। देश के दस राज्यों से आये एग्रीकल्चर वैज्ञानिकों के ग्रुप को शाश्वत यौगिक खेती की पूर्ण जानकारी देने के पश्चात् समूह चित्र में मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शशिकांत भाई, ब्र.कु.सुमंत भाई तथा ब्र.कु.चंद्रेश भाई,तपोवन।

नई दिल्ली। महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर शुभकामना देने के लिये 'सबसे बड़े ग्रीटिंग कार्ड' का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाली टीम के सदस्य ब्रह्माकुमारीज़ बाणेर पुणे की संचालिका ब्र.कु. डॉ. त्रिवेणी, 175 वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने वाले पहले भारतीय ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके, ब्र.कु. डॉ. सुवर्णा तथा सुप्रसिद्ध एस्ट्रोलॉजर,लेखिका और लाइफ कोच डॉ. सोहिनी शास्त्री ने मुलाकात कर उनका अभिनंदन किया व आगे के कार्यक्रमों के लिए शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर इस टीम ने राष्ट्रपति को गुलदस्ता भेंट कर उनका अभिवादन किया।

अरेराज-सोमेश्वरनाथ धाम(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र के 7वें वार्षिकोत्सव समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए विधायक सुनील मणि तिवारी, ब्र.कु. मीना बहन, मीडिया विंग के ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. योगी भाई, ब्र.कु. विभा बहन, आलोक भाई तथा गीता बहन।

शांतिवन। रेडियो मधुबन90.4 एफ.एम. द्वारा महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा के विरुद्ध जागरुकता फैलाने के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम 'हिंसा को कहें नो' के दो वर्ष पूरे होने पर गणका गांव में आयोजित प्रतियोगिता में विजेता आदिवासी महिलाओं को पुरस्कृत करते हुए आर.जे. ब्र.कु. उषा माहेश्वरी एवं आर.जे. ब्र.कु. अश्विनी, ब्र.कु. शुभाश्री आदि ने पुरस्कृत किया। इस मौके पर सरपंच ललिता गरसिया, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पारू गरसिया आदि उपस्थित रहे।

मोकामा-बिहार। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् एस.आई. विकास कुमार, कॉन्सटेबल जयनेन्द्र कुमार, कॉन्सटेबल अबनीस कुमार व जवान विक्की कुमार को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा बहन।

उदयपुर-राज.। एनसीसी के 75वें वर्षगांठ पर कर्नल भास्कर और आई.जी. पुलिस प्रफुल्ल कुमार को ईश्वरीय सौगात और ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता बहन।